SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

छत्तीसगढ़ राज्य की ग्रामीण क्षेत्रों की बालिकाओं की मूल्य शिक्षा का अध्ययन (रायपुर जिले के विशेष संदर्भ में)

रिंकी शुक्ला, एम.एड. शोधार्थी, शिक्षा संकाय,
गुंजन शर्मा, शिक्षा संकाय,
प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors

रिंकी शुक्ला, एम.एड. शोधार्थी, शिक्षा संकाय,
गुंजन शर्मा, शिक्षा संकाय,
प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी,
रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 20/07/2022
Revised on : -----
Accepted on : 27/07/2022
Plagiarism : 09% on 21/07/2022

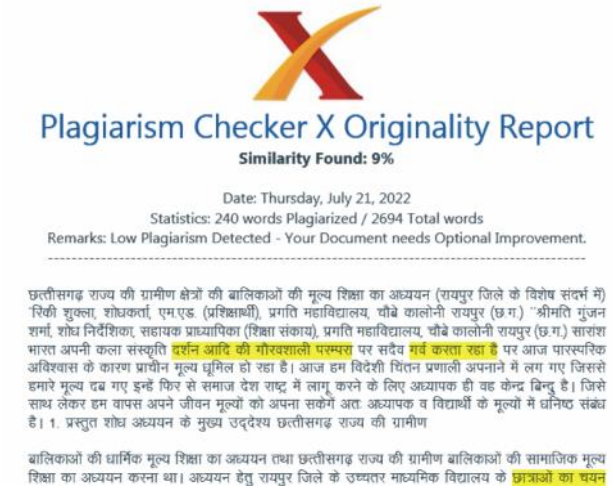

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 9%

Date: Thursday, July 21, 2022
Statistics: 240 words Plagiarized / 2694 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

छत्तीसगढ़ राज्य की ग्रामीण क्षेत्रों की बालिकाओं की मूल्य शिक्षा का अध्ययन (रायपुर जिले के विशेष संदर्भ में) 'रिंकी शुक्ला, शोधकर्ता, एम.एड. (प्रशिक्षार्थी), प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी रायपुर (छ.ग.) "श्रीमति गुंजन शर्मा, शोध निर्देशिका, सहायक प्राध्यापिका (शिक्षा संकाय), प्रगति महाविद्यालय, चौबे कालोनी रायपुर (छ.ग.) सारांश भारत अपनी कला संस्कृति दर्शन आदि की गौरवशाली परम्परा पर सदैव गर्व करता रहा है पर आज पारस्परिक अविश्वास के कारण प्राचीन मूल्य धूमिल हो रहा है। आज हम विदेशी चिंतन प्रणाली अपनाने में लग गए जिससे हमारे मूल्य दब गए इन्हें फिर से समाज देश राष्ट्र में लागू करने के लिए अध्यापक ही वह केन्द्र बिन्दु है। जिसे साथ लेकर हम वापस अपने जीवन मूल्यों को अपना सकेगें अतः अध्यापक व विद्यार्थी के मूल्यों में घनिष्ठ संबंध है। 1. प्रस्तुत शोध अध्ययन के मुख्य उद्देश्य छत्तीसगढ़ राज्य की ग्रामीण

बालिकाओं की धार्मिक मूल्य शिक्षा का अध्ययन तथा छत्तीसगढ़ राज्य की ग्रामीण बालिकाओं की सामाजिक मूल्य शिक्षा का अध्ययन करना था। अध्ययन हेतु रायपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं का चयन

शोध सार

भारत अपनी कला संस्कृति दर्शन आदि की गौरवशाली परम्परा पर सदैव गर्व करता रहा है पर आज पारस्परिक अविश्वास के कारण प्राचीन मूल्य धूमिल हो रहा है। आज हम विदेशी चिंतन प्रणाली अपनाने में लग गए जिससे हमारे मूल्य दब गए इन्हें फिर से समाज देश राष्ट्र में लागू करने के लिए अध्यापक ही वह केन्द्र बिन्दु है। जिसे साथ लेकर हम वापस अपने जीवन मूल्यों को अपना सकेगें अतः अध्यापक व विद्यार्थी के मूल्यों में घनिष्ठ संबंध है। प्रस्तुत शोध अध्ययन के मुख्य उद्देश्य छत्तीसगढ़ राज्य की ग्रामीण बालिकाओं की धार्मिक मूल्य शिक्षा का अध्ययन तथा छत्तीसगढ़ राज्य की ग्रामीण बालिकाओं की सामाजिक मूल्य शिक्षा का अध्ययन करना था। अध्ययन हेतु रायपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं का चयन किया गया है। चयनित विद्यार्थियों में 50 सरकारी एवं 50 गैर–सरकारी विद्यालय के छात्राओं का चयन किया गया है। अध्ययन में कुल 100 छात्राओं का चयन किया गया है। अध्ययन में सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के छात्राओं का चयन किया गया है। अध्ययन के लिए शोध के सर्वे विधि का प्रयोग किया गया है। शोध अध्ययन छात्राओं के मूल्यों तक ही सीमित है। प्रस्तुत समस्या के अध्ययन के लिए शोध कर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। न्यादर्श के लिए कुल 4 विद्यालयों की संख्या है एवं उसमें उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से 50 सरकारी छात्राएं तथा 50 गैर सरकारी छात्राओं का चयन किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में आकड़ों के संकलन के लिए प्रमाणीकृत उपकरण जिससे छात्राओं के मूल्यों परीक्षण के संबंध को मापने हेतु आर. के. ओझा तथा डॉ. महेश भार्गव द्वारा निर्मित प्रमाणीकृत उपकरण ''मूल्य परीक्षण मापनी'' का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत अध्ययन में परिकल्पनाओं

के परीक्षण एवं निष्कर्ष प्राप्ति हेतु माध्य, प्रमाप विचलन तथा क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया गया है। परिणाम प्रदर्शित करते हैं कि छत्तीसगढ़ राज्य की ग्रामीण बालिकाओं की धार्मिक मूल्य शिक्षा में सार्थक अंतर नहीं पाया गया तथा साथ ही छत्तीसगढ़ राज्य की ग्रामीण बालिकाओं की सामाजिक मूल्य शिक्षा में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

मुख्य शब्द

भारत, संस्कृति, बालिका.

भूमिका

शैक्षिक प्रक्रिया के प्रमुख संचालक के रूप में शिक्षक का स्थान अवश्य ही केन्द्रित है। यह न केवल अपन मौखिक शब्दों द्वारा वरन अपनी रूचि अभिरूचि, आचार विचार, रहन–सहन और अन्य मानव तत्वों द्वारा छात्रों पर गहरा प्रभाव डालता है। सत्य यह है कि प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप में छात्रों पर प्रभाव डालने वाला शिक्षक के समान कोई दूसरा तत्व नहीं है। इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक के जीवन मूल्यों के संबंध हो। प्रभावशाली एवं कम प्रभाव शाली शिक्षकों की पहचान जरूरी है। शिक्षक के जीवन मूल्यों के संबंधों को प्रभावित करने वाले बहुत से कारक है जिनका अध्ययन करना आवश्यक हो जाता है। छात्र देश और राष्ट्र की संपत्ति है। उनके शारीरिक, मानसिक और नैतिक विकास का दायित्व शिक्षक का होता है।

इस पद के महत्व को देखते हुए गुणी आत्मविश्वासी प्रतिभा संपन्न अनुभवी व्यक्ति का होना आवश्यक है। जिसके लिए आवश्यक है कि शिक्षक मानसिक स्वास्थ व जीवन मूल्यों से परिपूर्ण रहे जीवन मूल्य का महत्व बताते हुए केन्द्रीय सलाहकार बोर्ड ने बताया कि जीवन में नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों को स्थान मिलना चाहिए। जिससे बालक का चहुंओर विकास हो सके क्योंकि शिक्षण में जीवन मूल्यों का समावेश होने से शिक्षण में निष्पक्षता नियमितता, निष्ठा, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, सृजनशीलता आती है।

मानव जीवन में अधिगम की प्रक्रिया जीवन पर्यन्त चलती है। नवजात शिशु समायोपरान्त जब अपने परिवेश से परिचित होने जगता है तो वही से उसके सीखने की प्रक्रिया आरंभ होती है। बाल्याकाल से किशोरावस्था तक के काल में मनुष्य की अधिगम की क्षमता तीव्र होती है। इस अवस्था में उसे अपने भविष्य की चिन्ता होती है। भविष्य को उज्जवल, सुखमय बनाने के लिए वह कुल मुल्यों का निर्धारण करता है। इस समय बालक को नींव जैसे दृढ़ता आधार प्रदान करने में मूल्य अहम भूमिका निभाते है। जीवन की विकास की प्रक्रिया में उसे अच्छे–बुरे प्रिय–अप्रिय अनुभव प्राप्त होते है। कभी सफलता तो कभी असफलता मिलती है। इन अनुभवों में सार्थक, उपयोगी अनुभवों को ग्रहणकर वह स्थायी मूल्य की स्थापना कर लेता है।

किसी भी समाज के अच्छे–बुरे स्तर का आंकलन उसके मूल्य के ज्ञान के बिना नहीं बताया जा सकता है। मूल्य रूचि या उद्देश्य की थोड़ी बहुत स्थायी प्रवृत्तियां है। जिनमें किसी प्रकार की पुर्वज्ञान, अनुभव प्रत्यक्ष या उचित प्रक्रिया की तत्परता निहित है। मूल्य शब्द का दर्शनिक निहित है। मूल्य शब्द का दार्शानिक तात्पर्य किसी विचार अथवा दृष्टिकोण से हो सकता है। इसलिए मत–मतांतर की संभावनाएं अधिक हो सकता है। हम जानते है कि किसी वस्तु अथवा विचार का किसी व्यक्ति के लिए कोई मूल्य नहीं हो सकता किन्तु वही वस्तु या विचार किसी अन्य के लिए मूल्यवान साबित हो सकते हैं।

मूल्य की परिभाषाएं

प्लेटो के अनुसार

''शिक्षा एवं उसके शाश्वत मूल्यों से मेरा अभिप्राय उस प्रशिक्षण से है जो अच्छी आदतों के द्वारा मानव में अच्छे जीवन आदर्श का विकास और नैतिकता का विकास करती है।''

मुनरो के अनुसार

''मूल्य एक भावना है जो क्रियाओं से निर्मित होते रहते है।''

मनुष्य स्वस्फूर्ति होकर किसी को आदर्श मानकर या किसी लक्ष्य की मूर्ति के लिए जब कोई कार्य करता है तो वह किसी न किसी मानवीय मूल्य से प्रभावित होता है। यही मूल्य व्यवस्था व्यक्तिगत संरचना को नियंत्रित करती है।

राधाकमल मुखर्जी के अनुसार

''मानसीय मूल्य वे सममाजिा ज्ञान, लक्ष्य या आदर्श है जिनके आधार पर विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों तथा विषयों का मूल्यांकन किया जाता है। माता–पिता, पारिवारिक सदस्य, क्रीड़ा समूह तथा अन्य संस्थाएं मूल्यों के अर्जुन में सहायक होती है। आज बालक मूल्यों को विवशता में अपनाते है।''

वर्तमान में छात्र प्राथमिक शिक्षा में जाकर अपनी रूचि वास्तविक मूल्यों को प्राप्त करने में नहीं रखते। वे पाठ्य पुस्तकों के ज्ञान को प्राप्त करने में रह जाते हैं। वर्तमान में बालकों को प्राथमिक शिक्षा प्राप्त करने में अनेक राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, व्यवसायिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है इस कारण बालक उचित रूप से मूल्यों को प्राप्त नहीं कर सकता।

अध्ययन का महत्व

वर्तमान समय में नैतिक मूल्य के प्रति आस्था घटने के कारण समाज में नैतिक संकट की स्थिति उत्पन्न मूल्यों का अभाव निरंतर जारी रहा तो समाज में अराजकता बहुत ही तेजी के साथ फैल सकती है। विशेषकरण शहरों में एवं ग्रामीण क्षेत्रों की बालिकाओं में इसकी आत्यधिक कमी पायी गयी है। जिसके कारण वे समाज में अधिक पीछे रह गयी है।

मूल्य शिक्षा का अर्थ है दैनिक जीवन में कौशल व्यक्तित्व के सभी दौरों की समझना। ग्रामीण क्षेत्रों की बालिकाओं को इसकी सुचारू रूप से जानकारी न होने के कारण वे शिक्षा से वंचित रह जाती है। क्योंकि इसी के माध्यम से छात्रा जिम्मेदारी अच्छी या बुरी दिशा में जीवन का महत्व लोकतांत्रीक तरीके से जीवन यापन, संस्कृति की समझ महत्वपूर्ण सोच आदि को समझ सकते हैं। खासकर लड़कियों एवं महिलाओं में इसके प्रति जागरूकता अत्यधिक होनी चाहिए।

मूल्यों का संबंध मानव जीवन की अभिव्यक्ति से है। मानव जीवन में मूल्यों की आवश्यकता, महत्व अनिवार्यता व अपरिहार्यता जरूरी है। ताकि वह अपने परिवार के साथ–साथ सामाजिक दायित्व को निभा सके। मूल्य सामाजिक जीवन को सुगम एवं विस्तृत बनाती है। वैदिक मंत्रों में मूल्यों को विशेष महत्व दिया गया है। मूल्यों के न होने से अनेक समस्या का सामना करना पड़ सकता है।

पूर्व में किए गए शोध कार्य

भारत में किए गए शोध अध्ययन

सीमा कुमारी (2019) उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के नैतिक मूल्यों का सृजनात्मकता पर प्रभाव का अध्ययन। इसके उद्देश्य निम्न हैं उच्च एवं औसत नैतिक मूल्य वाले उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियो के सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन। उच्च एवं निम्न नैतिक मूल्य चाले उच्च आध्यात्मिक स्तर के विद्यार्थियों के सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन। औसत एवं निम्न नैतिक मूल्य वाले उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सृजनात्मकता का तुलनात्मक अध्ययन। निष्कर्ष विद्यार्थी हमारे समाज के नीवं होते हैं। विद्यार्थी जीवन में ही अच्छी गुणों का विकास कर उन्हें एक अच्छे जीवन की और अग्रसर हो सके। अतः आवश्यक है कि शिक्षकों एवं अभिभावकों के द्वज्ञरा विद्यार्थियों में नैतिक मूल्य का विकास क्रम प्रयास किया गए कि विद्यार्थी समाज एवं विद्यालय में सही ढंग से समायोजिक होकर एक स्वस्थ एवं संयमित जीवन की ओर अग्रसित होकर एक स्वस्थ समाज का निर्माण कर सके।

मधु साहनी (2009) ने माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि सभी विद्यार्थी के सनात्मक सर्वोच्च एवं धार्मिक मूल्य निम्नतम है तथा कलात्मक मूल्य, शक्ति

मूल्य एवं ज्ञानात्मक मूल्यों के संदर्भ में विग के आधार पर विभिन्नता पायी जाती है।

मैथिलीशरण प्रसाद सिंह (2009) ने वर्तमान शिक्षा के मूल्य संकट के कारण एवं सुझाव पर अध्ययन किया गया। निष्कर्ष इस अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि यह सर्वविदित है कि जब–जब मूल्यों से जूडने का प्रयास किसी समुदाय या समाज के व्यक्ति ने किया वह सामान्य मनुष्य की परिधि से उठकर महामानव की श्रेणी में जा पहुंचा तथा समाज एवं विश्व में नयी दिशा प्राप्त की।

विदेशों में किए गए शोध अध्ययन

हार्रिन्स, जेड. एवं अन्य (2011) ने ''समायोजन और छोटे समूहों में नेतृत्व का उदय'' शीर्षक पर प्रायोजनात्मक शोध कार्य किया और शोध के निष्कर्ष में पाया कि समायोजन और नेतृत्व उदय में सकारात्मक सहसंबंध होता है योग्यता का उपयोग, अवबोध और समायोजन आदि का नेतृत्व से सकारात्मक सहसंबंध पाया गया।

मार्टिन, रॉबिन एवं अन्य सदस्य (2012) ने ''सामाजिक सुरक्षा, अनुपूरक परिदान और कार्य के नये तरीके ओर समायोजन'' शीर्षक पर शोधकर्ता ने एक प्रोफाईल तैयार किया। इन्होंने अपने प्रोफाइल में 15 शोधार्थियों को शामिल किया जो इस क्षेत्र में शोधरत थे। इन्होंने इन शोधों के प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर बताया कि सामाजिक सुरक्षा वर्तमान जगत का एक महत्वूपर्ण भाग है। सामाजिक जीवन में कार्य के रूप परिवर्तन के साथ ही समायोजन होता है।

समस्या कथन

छत्तीसगढ़ राज्य की ग्रामीण क्षेत्रों की बालिकाओं की मूल्य शिक्षा का अध्ययन।

प्रकार्यात्मक परिभाषा

सरकारी विद्यालयः वह संस्था जिसे सरकार द्वारा अनुदान प्राप्त हो अतः कार्य भार सरकार द्वारा संभाला जाता है।

गैर सरकारी विद्यालयः गैर सरकारी विद्यालय स्वतंत्र विद्यालय या अशासकीय विद्यालय होते हैं जो केन्द्र तथा राज्य सरकार के अधीन संचालित नहीं होते हैं।

मूल्यः मूल्य एक प्रकार का मानक है, मनुष्य किसी वस्तु, क्रिया, विचार को अपनाने से पूर्व यह निर्णय करता है कि वह उसे अपनाये या त्याग दे। जब ऐसा विचार व्यक्ति के मन में निर्णयात्मक ढंग से आता है तो वह मूल्य कहलाता है।

अध्ययन का उद्देश्य

- छत्तीसगढ़ राज्य की ग्रामीण बालिकाओं की धार्मिक मूल्य शिक्षा का अध्ययन करना।
- छत्तीसगढ़ राज्य की ग्रामीण बालिकाओं की सामाजिक मूल्य शिक्षा का अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पना

- छत्तीसगढ़ राज्य की ग्रामीण बालिकाओं की धार्मिक मूल्य शिक्षा में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
- छत्तीसगढ़ राज्य की ग्रामीण बालिकाओं की सामाजिक मूल्य शिक्षा में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

अध्ययन की परिसीमा

- प्रस्तुत अध्ययन हेतु रायपुर जिले का चयन किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन के लिए उच्च. माध्यमिक विद्यालय के छात्राओं का चयन किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन में छात्राओं का चयन किया गया है।
- चयनित विद्यार्थियों में 50 सरकारी एवं 50 गैर–सरकारी विद्यालय के छात्राओं का चयन किया गया है।

- प्रस्तुत अध्ययन में कुल 100 छात्राओं का चयन किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन में सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के छात्राओं का चयन किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन के लिए शोध के सर्वे विधि का प्रयोग किया गया है।
- प्रस्तुत अध्ययन छात्राओं के मूल्यों तक ही सीमित है।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत समस्या के अध्ययन के लिए शोध कर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत अध्ययन में अनुसंधान हेतु रायपुर जिले के ग्रामीण क्षेत्र के चार उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया है जिसमें दो सरकारी व दो गैर–सरकारी विद्यालयों को लिया गया, जिसमें जनसंख्या के अन्तर्गत प्रत्येक उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयों से 25–25 छात्राओं का चयन किया गया है। कुल जनसंख्या 100 को जिया गया है।

न्यादर्श

न्यादर्श के लिए कुल 4 विद्यालयों की संख्या है, एवं उसमें उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से 50 सरकारी छात्राएं तथा 50 गैर सरकारी छात्राओं का चयन किया गया है।

चर

स्वतंत्र चरः मूल्य शिक्षा

आश्रित चरः ग्रामीण बालिकाएं

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में आकड़ों के संकलन के लिए प्रमाणीकृत उपकरण जिससे छात्राओं के मूल्यों परीक्षण के संबंध को मापने हेतु आर. के. ओझा तथा डॉ. महेश भार्गव द्वारा निर्मित प्रमाणीकृत उपकरण ''मूल्य परीक्षण मापनी'' का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकीय विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन में परिकल्पनाओं के परीक्षण एवं निष्कर्ष प्राप्ति हेतु माध्य, प्रमाप विचलन तथा क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया गया है। सांख्यिकीय विश्लेषण शोध कार्यों द्वारा प्राप्त आंकड़ों के सारणीयन के पश्चात् उनका गणितीय विश्लेषण किया गया। गणितीय विश्लेषण हेतु निम्न सांख्यिकीय सूत्र का प्रयोग किया गयाः

मध्यमान (Mean) : $M = \frac{\Sigma X}{N}$

प्रमाप विचलन S.D. $= \sqrt{\frac{\sum d^2}{N}}$

क्रांतिक अनुपात : $CR = \frac{M_1 \sim M_2}{\sqrt{\frac{\sigma_1^2}{N_1} + \frac{\sigma_2^2}{N_2}}}$

परिकल्पना का प्रमापीकरण एवं परिणाम

परिकल्पना H_1

छत्तीसगढ़ राज्य की ग्रामीण बालिकाओं की धार्मिक मूल्य शिक्षा में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक 01: छत्तीसगढ़ राज्य की ग्रामीण बालिकाओं की धार्मिक मूल्य शिक्षा की संख्या, माध्य, प्रमाणिक विचलन, क्रांतिक अनुपात एवं सार्थकता दर्शाने वाली सारणी

चर	विद्यार्थियों की संख्या	माध्य	प्रमाप विचलन	CR मूल्य	सार्थक/सार्थक नहीं
सरकारी छात्राएं	50	272.74	12.39	0.4246	.05 स्तर पर सार्थक नहीं
गैर सरकारी छात्राएं	50	273.98	16.52		

df = 98

व्याख्या

सरकारी एवं गैर सरकारी उ. मा. विद्यालय में अध्ययनरत् छात्राओं की संख्या 50–50 में परीक्षण किया गया जिसमें सरकारी उ. मा. विद्यालय के छात्राओं के धार्मिक मूल्यों शिक्षा का प्राप्तांकों का माध्य 272.74 व प्रमाप विचलन 12.39 प्राप्त हुआ तथा गैर सरकारी उ. मा. विद्यालयों की छात्राओं के धार्मिक मूल्य शिक्षा का प्राप्तांक माध्य 273. 98 व प्रमाप विचलन 16.52 प्राप्त हुआ है। सरकारी उ. मा. विद्यालय के छात्राएं व गैर सरकारी उ. मा. विद्यालय की छात्राओं का धार्मिक मूल्य शिक्षा के माध्य में अंतर की सार्थकता हेतु क्रांतिक अनुपात की गणना की गई। 98 कि के लिए 0.05 स्तर पर सारणी मूल्य 1.98 है जो क्रांतिक अनुपात के गणना धार्मिक मूल्य से अधिक है। इस प्रकार दोनों सरकारी व गैर सरकारी छात्राओं के धार्मिक मूल्यों शिक्षा के प्राप्तांकों का अंतर सार्थक नहीं है।

निष्कर्ष

परिकल्पना H_1 '' छत्तीसगढ़ राज्य की ग्रामीण बालिकाओं की धार्मिक मूल्य शिक्षा में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।'' अतः यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

आरेख क्रमांक 01: सरकारी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र एवं छात्राओं के मूल्यों का विद्यार्थियों की संख्या, माध्य एवं प्रमाणिक विचलन के लिए आरेख

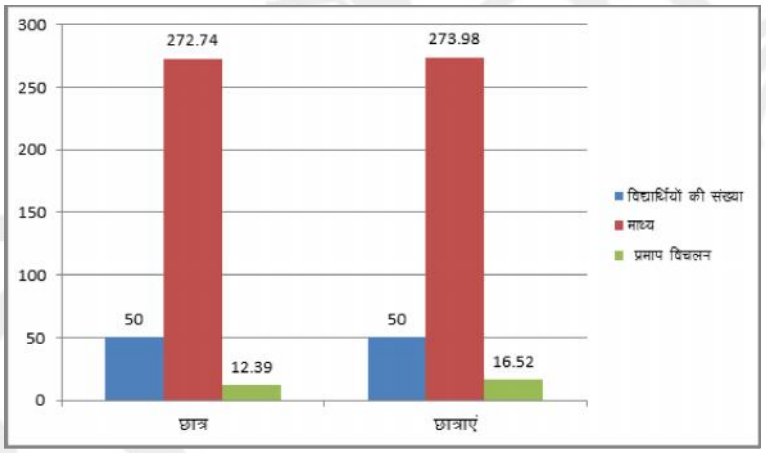

परिकल्पना H_2

छत्तीसगढ़ राज्य की ग्रामीण बालिकाओं की सामाजिक मूल्य शिक्षा में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

सारणी क्रमांक 02: छत्तीसगढ़ राज्य की ग्रामीण बालिकाओं की सामाजिक मूल्य शिक्षा की संख्या, माध्य, प्रमाणिक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात के लिए सारणी

चर	विद्यार्थियों की संख्या	माध्य	प्रमाप विचलन	CR मूल्य	सार्थक/सार्थक नहीं
सरकारी छात्राएं	50	261.36	16.02	0.1825	.05 स्तर पर सार्थक नहीं
गैर सरकारी छात्राएं	50	260.68	20.91		

df = 98

व्याख्या

सरकारी एवं गैर–सरकारी उ. मा. विद्यालय में अध्ययनरत् छात्राओं की संख्या 50–50 में परीक्षण किया गया जिसमें सरकारी उ. मा. विद्यालय के छात्राओं की सामाजिक मूल्य शिक्षा का प्राप्तांकों का माध्य 261.36 व प्रमाप विचलन 16.02 प्राप्त हुआ तथा गैर–सरकारी उ. मा. विद्यालयों की छात्राओं की सामाजिक मूल्य शिक्षा का प्राप्तांकों माध्य 260.68 व प्रमाप विचलन 20.91 प्राप्त हुआ है। उ. मा. विद्यालय के छात्राओं की सामाजिक मूल्य शिक्षा का माध्य में अंतर की सार्थकता हेतु क्रांतिक अनुपात की गणना की गई। 98 क ि के लिए 0.05 स्तर पर सारणी मूल्य 1.98 है जो क्रांतिक अनुपात के गणना मूल्य से अधिक है। इस प्रकार दोनों सरकारी एवं गैर सरकारी छात्राओं के सामाजिक मूल्य शिक्षा के प्राप्तांकों का अंतर सार्थक नहीं है।

निष्कर्ष

परिकल्पना H_2 ''छत्तीसगढ़ राज्य की ग्रामीण बालिकाओं की सामाजिक मूल्य शिक्षा में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।'' अतः यह परिकल्पना स्वीकृत होती है।

आरेख क्रमांक 02: छत्तीसगढ़ राज्य की ग्रामीण बालिकाओं की सामाजिक मूल्य शिक्षा की संख्या, माध्य एवं प्रमाणिक विचलन के लिए आरेख

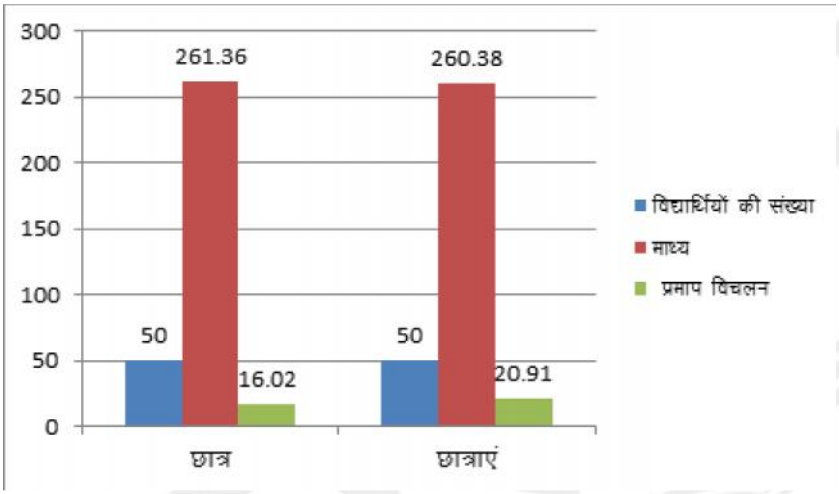

निष्कर्ष

- छत्तीसगढ़ राज्य की ग्रामीण बालिकाओं की धार्मिक मूल्य शिक्षा में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- छत्तीसगढ़ राज्य की ग्रामीण बालिकाओं की सामाजिक मूल्य शिक्षा में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

सुझाव

- मूल्यों के विकास हेतु प्रशिक्षित शिक्षकों की नियुक्ति करना चाहिए।
- समाज में रूढिवादिता को दूर कर आधुनिकता को अपनाना चाहिए।
- अभिभावकों में लड़की व लड़के की पढ़ाई में भिन्नता को दूर कर समानता अपनाना चाहिए।
- परिवार व विद्यालय का वातावरण मूल्यों के आदर्श संबंधी समायोजित करने हेतु छात्र–छात्राओं को दिशा निर्देशन करना चाहिए।

अनुकरणीय अध्ययन

- विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों के संबंधों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।
- विद्यार्थियों के सामाजिक मूल्यों के संबंधों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।

- विद्यार्थियों के मूल्यों से संबंधित समस्याओं का अध्ययन।
- विद्यार्थियों के मूल्यों के संबंध में सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के आधार पर अध्ययन।

संदर्भ सूची

1. ओझा, आर. के. (1971) *''मूल्यों का अध्ययन''* हिन्दी संस्करण, आगरा, नेशनल साइकोलाजिकल कार्पोरेशन
2. कपिल, एच. के. (2005) *''अनुसंधान विधियां'',* आगरा, हर प्रसाद भार्गव पुस्तक प्रकाशन
3. चौबे, सरयू प्रसाद (2005) *''शिक्षा के समाजशास्त्री आधार'',* आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर, पृ. सं. 299–300
4. पाण्डेय, राजेश कुमार (2005) ''शिक्षा के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति वाले जनजातीय विधार्थियों के मूल्य'' *जनरल ऑफ एजुकेशल स्टडीज,* वाल्यूम–3, पृ. सं. 27–29
5. पाण्डेय, सुषमा (2005) ''शिक्षक–शिक्षा कार्यक्रमों में मूल्य संवर्धन के प्रति दृष्टिकोण'' *जनरल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज,* वाल्युम–3, पृ. सं. 64।
6. पाठक, पी. डी. (2003) *''शिक्षा मनोविज्ञान'',* आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर।
7. भारती एवं माथुर प्रीति (2000) ''कार्यरत एवं अकार्यरत महिलाओं के मूल्यों पर अध्ययन'', *प्राची जनरल ऑफ साइकोकल्चरल डाईमेन्सन,* वाल्यूम–16, नं. 1
8. द्विवेदी, ए. एन. (2005) ''ग्यारहवी कक्षा के विद्यार्थियों के पर्यावरणीय मूल्यों का अध्ययन'' जनरल ऑफ एजुकेशन स्टडिज, वाल्यूम 3।
9. रामशकल पाण्डेय (2001) *''मूल्य शिक्षण'',* आगरा, विनोद पुस्तक मंदिर
10. अस्थाना, विपिन (2005) *मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन मूल्यांकन,* पुस्तक मंदिर, आगरा, पृष्ठ 201–210
11. कपिल, एच. के. (2001). *अनुसंधान विधियां,* आगराः एच.पी. भार्गव बुक हाउस
12. गोयल, सुनील और गोयल, सुनीता (2001) *सामाजिक अनुसंधान के मूल तत्व,* जयपुरः आर.डी. पब्लिशर
13. शर्मा, आर. ए., *'शिक्षक प्रशिक्षण तकनीक'* आर लाल बुक डिपो, मेरठ।
14. सिंह, एच. डी. (2001) *वैज्ञानिक सामाजिक अनुसंधान एवं सर्वेक्षण के मूल तत्व,* इंदौरः कमल प्रकाशन 195–201

****